ECONOMICS

B A PART – I (Honours)

PAPER I

PRINCIPLES of ECONOMICS

- Website

eGyankosh.ac.in पर जाएं

- इस page के

IGNOU Self Learning Material (SLM) बटन को दबाएं (click करें)।

- नए पेज में स्क्रॉल कर नीचे

Sub-communities within this community

Heading के रूप में लिखा मिलेगा। इसमें नीचे 02 नंबर पर

02. School of Social Sciences (SOCC)

लिखा मिलेगा।इस बटन को दबाएं (click करें)। पुनः

Sub-communities within this community

Heading के रूप में लिखा मिलेगा। इसमें नीचे Discipline **को छोड़कर** **Levels** को select कीजिए / click कीजिए।

Sub-communities within this community

लिखा आयेगा, इसमें

Bachelor's Degree Programmes

को click करके खोलें ।

Sub-communities within this Community लिखाआयेगा

इसमें नीचे Archieved **को छोड़कर** **Current** को select कीजिए / click कीजिए।

पुनः

Sub-communities within this Community लिखाआयेगा जिसके अंतर्गत

Bachelor of Arts (Honours) Economics (BAECH)

लिखाआयेगा जिसके अंतर्गत

Sub-communities within this Community.

में नीचे

बी ई सी सी – प्रारंभिक व्यष्टी अर्थशास्त्र

लिखा मिलेगा

इसे click करके खोलें

नए पृष्ठ पर

बी. ई .सी .सी -101 - प्रारंभिक व्यष्टी अर्थशास्त्र

लिखा मिलेगा और उसके नीचे

Collections within this Community

में प्रारंभिक व्यष्टी अर्थशास्त्र के अध्याय दिए गए हैं जिसमें पहला अध्याय है

खण्ड-1 परिचय

इसे click करके खोलें

नए पृष्ठ पर पुनः **खण्ड-1 परिचय** को click करें, खोलें

और पुनः pdf file के view/ open, option पर जाकर इसे click करें।

यह पूरा chapter पठन के लिए खुल जायेगा।

किसी भी विषय की कुछ मूलभूत अवधारणा होती है जो उस विषय को परिभाषित करता है और विषय को समझने के लिए आवश्यक है गया है।**"यथार्थमूलक एवं अदर्शमूलक अर्थशास्त्र"** की मूलभूत अवधारणा है।

इस इकाई के पृष्ठ संख्या 19 में अर्थशास्त्र विषय के महत्वपूर्ण टूल (ज्ञान का साधन) **"यथार्थमूलक एवं अदर्शमूलक अर्थशास्त्र"** से हमारा प्रारंभिक परिचय होता है।

अदर्शमूलक अर्थशास्त्र किसी आर्थिक क्रिया, नीति या परिणाम के आर्थिक रूप से न्यायसंगत/ अन्यायसंगत होने/न होने का विचार करता है। तदनुसार किसी आर्थिक क्रिया के सही या ग़लत परिणाम के अध्ययन के पशचत् उचित अथवा अनुचित का विचार करके, सुधार के तौर पर "क्या हो सकता है या क्या होना

चाहिए?", ऐसे अदर्शमूलक प्रश्नों या मूल्यों पर अपना ध्यान केंद्रित करता है। अदर्शमूलक अर्थशास्त्र value judgement (मूल्य निर्णय) पर आधारित है।

यथार्थमूलक अर्थशास्त्र तथ्यों पर आधारित है जिसे उचित अथवा अनुचित नहीं ठहराया जा सकता। या उन्हें अनुमोदित/स्वीकृत अथवा अस्वीकृत नहीं किया जा सकता। यह किसी आर्थिक परिघटना को "क्या है"(what is) परिदृश्य में अध्ययन करता है।

यथार्थमूलक अर्थशास्त्र मूलतः आर्थिक घटना या संबंधित घटना, परिणाम या प्रक्रिया का विवरण प्रस्तुत करने, परिमाण/मात्रा निर्धारित करने, निरूपण और व्याख्या करने या इनसे संबंधित प्रत्याशा/अपेक्षा के निरूपण का कार्य करता है। यह निष्पक्ष डेटा विश्लेषण, प्रासंगिक तथ्य, जुड़े आंकड़ों पर निर्भर करता है। साथ ही यह कारण और प्रभाव संबंध या व्यवहार संबंध स्थापित करने की कोशिश करता है जिससे आर्थिक सिद्धांतों का विकास या उनकी जांच सुनिश्चित हो सके। ऐसा कहा जाता है कि "Positive economics is objective and fact based."अर्थात् यथार्थमूलक अर्थशास्त्र तथ्य पर आधारित है और निष्पक्ष है। यह यथार्थपरक, सटीक विवरण/वर्णन और नापने योग्य कथन पर आधारित होता है। इन कथन को मूर्त प्रमाण और ऐतिहासिक तथ्यों के विरूद्ध मापा या परखा जा सकता है। यथार्थमूलक अर्थशास्त्र में स्वीकृति या अस्वीकृति; पसंद या नापसंद जैसा कोई उदाहरण नहीं उपस्थित होता।

यथार्थमूलक अर्थशास्त्र का उदाहरण है कि "सरकार द्वारा प्रदत्त स्वास्थ सेवा से सार्वजनिक व्यय में वृद्धि होती है।" यह एक तथ्य पर आधारित कथन है जिससे कोई मूल्य निर्णय(value judgement) नहीं जुड़ा है। इसकी सत्यता को सरकार द्वारा प्रदत्त स्वास्थ सेवा पर होने वाले व्यय के अध्ययन से सिद्ध/ प्रमाणित (या अप्रमाणित) किया जा सकता है।

अदर्शमूलक अर्थशास्त्र

अदर्शमूलक अर्थशास्त्र अपना ध्यान वैचारिक, निदेशात्मक, राय उन्मुख, मूल्य निर्णय आधारित, और "क्या होना चाहिए" जैसे कथन पर केंद्रित करता है।ऐसे आर्थिक मुद्दे जैसे आर्थिक विकास के मसले, निवेश के निर्णय, एवं नीतिगत निर्णय। इसका मुख्य उद्देश्य है लोगों की अलग अलग आर्थिक नीति, कार्यक्रम या परिस्थिति के विषय में उनकी संयुक्त इच्छा/वांछनीयता (या इसकी कमी) को व्यक्त करना, यह प्रश्न करते हुए या उत्तर बतलाते हुए कि "क्या होना चाहिए" या "क्या हो सकता है"।

अदर्शमूलक अर्थशास्त्र व्यक्तिपरक या व्यक्ती- निष्ट होता है । यह आदर्शों पर या व्यक्तिगत दृष्टिकोणों पर निर्भर करता है। निर्णय लेने की प्रक्रिया में निजी राय, विचार, मान्यता या मत महत्वपूर्ण होते हैं। अदर्शमूलक अर्थशास्त्र के कथन गैर लचीला और निर्देशात्मक प्रकृति का होता है। अतः इन कथनों में राजनीतिक या सत्तात्मक स्वर प्रखर होते हैं।

"सरकार को बुनियादी स्वास्थ सेवा सब को उपलब्ध कराना चाहिए" – यह एक **अदर्शमूलक** कथन है। जैसा कि हम इस कथन के तर्क से समझ सकते हैं कि यह कथन आदर्शमूलक, जिसकी जड़ में व्यक्तिगत दृष्टिकोण है। साथ ही यह " क्या होना चाहिए के सिद्धांत पर आधारित है

अर्थशास्त्र के मूल सिद्धांत (basics) को जानना आवश्यक है। इस इकाई में दिए गए अर्थशास्त्र के मूल तत्व को जानना किसी भी अच्छे छात्र की दृष्टि से सफलता की कुंजी है। इस अवधारणा का उपयोग अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र के अध्ययन में व्यापक है।

इस इकाई में कई बोध प्रश्न छात्रों को हल करने के लिए दिया गया है जिससे उनका concept clear हो और अभ्यास से विश्वास में निरंतर वृद्धि हो।

बी ए भाग -1 की मुख्य परीक्षा में यथार्थमूलक अर्थशास्त्र एवं अदर्शमूलक अर्थशास्त्र में क्या अंतर है ? इस विषय पर 10 अंक का संक्षिप्त नोट्स लिखने आ सकता है या किसी लम्बे प्रश्न का एक अंश हो सकता है।अतः इसकी तैयारी आवश्यक है।

IGNOU (इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय) की नेट पर उपलब्ध सामग्री का स्तर बहुत अच्छा है। इसे कोई भी छात्र बिना अनुमति के और बिना पैसे खर्च किए उपयोग के लिए स्वतंत्र है। इसका लाभ उठाकर ज्ञानार्जन करें।

यह BA level का कोर्स सामग्री है किन्तु साथ ही reference book का अध्ययन किया जाना आवश्यक है। प्रत्येक इकाई के अंत में उस इकाई से संबंधित पुस्तकों का नाम, लेखक का नाम एवं प्रकाशक का नाम दिया गया है।

Corona virus की इस विभीषिका काल में **IGNOU (इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय)** इस पठन सामग्री जो इंटरनेट पर सुलभ है का छात्र अपने ज्ञान वर्धन और परीक्षा की तैयारी के लिए उपयोग करेंगे और लाभ उठाएंगे।

Prof. Chanchal Kumar Pandey

Head

Department of Economics

Maharaja College

Ara